राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

ई–मेल–**prrajbhavan@gmail.com**
मो॰–9431283596

प्रेस–विज्ञप्ति

राज्यपाल ने श्रीमती लक्ष्मी सिंह की पुस्तक– 'बिहार के पर्व–त्योहारों के गीत' को लोकार्पित किया

पटना, 08 मई 2018

''कोई भी समाज अपनी संस्कृति से कटकर जिन्दा नहीं रह सकता। लोक संस्कृति, लोकगीत और लोक–संगीतों की रक्षा के जरिये हम भारतीय सभ्यता के इतिहास को सुरक्षित रख पाएँगे।'' –उक्त उद्‌गार, महामहिम राज्यपाल श्री सत्य पाल मलिक ने स्थानीय ए॰एन॰ सिन्हा समाज अध्ययन संस्थान के सभागार में लेखिका प्रो॰ (डॉ॰) लक्ष्मी सिंह की पुस्तक –''बिहार के पर्व–त्योहारों के गीत''–को लोकार्पित करते हुए व्यक्त किये। राज्यपाल ने कहा कि अमीर खुसरो ने ब्रज के लोकजीवन के गीतों को संकलित किया था, जो बाद में भी अपनी मार्मिकता के कारण काफी लोकप्रिय हुए।

राज्यपाल श्री मलिक ने कहा कि पंजाबी, हरियाणवी, ब्रजी, अवधी, मैथिली, भोजपुरी, मगही आदि विभिन्न लोक भाषाओं के आंचलिक गीतों में ग्रामीण संस्कृति, परम्पराओं, रीति–रिवाजों तथा संवेदनाओं की झलक देखने को मिलती है। राज्यपाल ने इस बात पर खुशी जाहिर की कि लोकार्पित पुस्तक में विभिन्न प्रकार के लोकगीतों के संकलित हो जाने से आज की बहु–बेटियाँ को भी अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत को सहेजने–सँवारने का मौका मिलेगा। राज्यपाल ने 'छठ पर्व' के अवसर पर गाये जाने वाले एक पारम्परिक लोकगीत का उल्लेख करते हुए कहा कि इस गीत में एक महिला द्वारा अपने परिवार के एक–एक सदस्य के लिए हर तरह की खुशी और प्रगति की कामना की गई है। सूर्यदेव समग्रता में की गई इस नारी–प्रार्थना पर पूरे परिवार की समृद्धि और सफलता का वरदान देते हैं। राज्यपाल ने कहा कि लोक जीवन की खूबसूरती, विशेषताओं, परम्पराओं आदि को बचाये रखने में नारियों का बहुत बड़ा योगदान है।

राज्यपाल ने कहा कि बिहार की लोक संस्कृति भी अत्यन्त समृद्ध और प्रभावशालिनी रही है। उन्होंने कहा कि भारत का जो 'स्वर्ण युग' है, वह वस्तुतः बिहार का ही गौरवमय इतिहास है। राज्यपाल ने बिहारी युवाओं और प्रतिभाओं की क्षमता को रेखांकित करते हुए कहा कि दिल्ली की छोटी कोठरियों में परीक्षा की तैयारी कर ये युवा भारतीय प्रशासनिक सेवा एवं अन्य अखिल भारतीय सेवाओं में काफी संख्या में चयनित होते हैं। राज्यपाल ने युवाओं को उत्साहित करते हुए कहा कि मुझे भरोसा है कि 'नोबेल पुरस्कार' आदि हासिल करने में भी बिहारी युवा पीछे नहीं रहेंगे। राज्यपाल ने कहा कि बिहार की प्रगति कृषि क्षेत्र के विकास पर निर्भर है और यह सुखद संकेत है कि 'दूसरी हरित क्रांति' को बिहार में ही सर्वाधिक रूप से सफल बनाने के लिए हर क्षेत्रों द्वारा सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ॰ गुलाब चन्द राम जायसवाल ने कहा कि लोकगीतों में भारत की सांस्कृतिक आत्मा संचित है।

कार्यक्रम में स्थानीय कॉलेज ऑफ कॉमर्स आर्ट्स एवं साइंस के प्राचार्य डॉ॰ तपन कुमार शांडिल्य ने स्वागत–भाषण तथा 'वातायन' के निदेशक श्री राजेश शुक्ल ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ॰ गिरीश कुमार चौधरी, दूरदर्शन की अधिकारी श्रीमती रत्ना पुरकायस्थ सहित कई गणमान्यजन, प्राध्यापक गण, साहित्यकार आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम–संचालन श्रीमती पल्लवी विश्वास ने किया।

.....